वि. वि. मं.

रामकृष्ण महादेव साळगांवकर उच्च माध्य. विद्यालय

कोंब मडगांव गोवा

प्रथम सत्र परीक्षा

दिनाक: २२ \३ \ २०२४ | विषय :हिन्दी | समय: ३ घंटे
कक्षा: ११वी | | अंक: ८०

सामान्य निर्देश :

- सभी प्रश्न अनिवार्य है।
- प्रश्न पत्र तीन खंडो में विभाजित है।
- कुल प्रश्न ४० - खंड क- १५ अंक , खंड ख - ४० अंक, खंड ग - २५ अंक
- प्रश्न क्रमांक स्पष्ट रूप से लिखिए।
- दायी ओर दर्शायी हुई संख्या प्रश्न के अंक दर्शाती है।

खण्ड क (१५ अंक)

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर अंत में पूछे गये प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

जब तक किशनदा दिल्ली में रहे तब तक यशोधर बाबू ने उनके पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्ता की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाई। किशनदा के चले जाने के बाद उन्होने ही उनकी कई परपराओं को जीवित रखने की कोशिश की और इस कोशिश में पत्नी और बच्चो को नाराज किया। घर मे होली गवाना , जन्यो पुन्यु के दिन सब कुमाऊँनियो को जनेऊ बदलने के लिए अपने घर आमंत्रित करना , रामलीला की तालिम के लिए क्वार्टर का एक कमरा देना ये और ऐसे ही कई और काम यशोधर बाबू ने किशनदा से विरासत मे लिए थे। उनकी पत्नी और बच्चों को इन आयोजनों पर होनेवाला खर्च और इन आयोजनों मे होनेवाला शोर , दोनों ही सख्त नापसंद थे। बदतर यही कि इन आयोजनों के लिए समाज में भी कोई खास उत्साह रह नही गया है। अफसोस ,आज प्रवचन सुनने मे यशोधर जी का मन खास लगा नहीं। सच तो यह है कि वह भीतर से बहुत ज्यादा धार्मिक अथवा कर्मकांडी है नही। हाँ इस संबंध मे अपने मर्यादा पुरुष किशनदा द्वारा स्थापित मानक हमेशा उनके सामने रहे है। जैसे जैसे उम्र ढल रही है वैसे वैसे वह भी किशनदा की तरह रोज मंदिर जाने , संध्या पुजा करने और गीता प्रेस गोरखपुर की किताबें पढने का यत्न करने लगे है। अगर कभी उनका मन शिकायत करता कि इस सब में नही पा रहा हूँ तब उससे कहते है कि भाई लगना चाहिए। अब तो माया मोह के साथ साथ भगवत् भजन को भी कुछ स्थान देना होगा कि नही ? नयी पीढ़ी देकर राजपाट तुम लग जाओ बाट वन प्रदेश की। जो करते है , करे। हमे तो अब इस व - रल्ड की नहीं , उसकी , इस लाइफ की नही , उसकी चिंता करनी है।

वैसे अगर बच्चे सलाह माँगे , अनुभव का आदर करें तो अच्छा लगता है। अब नही माँगते तो न माँगे।

१. यशोधर बाबू ने किशनदा से विरासत मे क्या क्या लिया था ? (२)
२. गद्यांश में आये कोई दो विशेषण लिखिए ? (२)
३. यशोधर बाबू मन लगाने का प्रयत्न किस प्रकार कर रहे थे ? (२)
४. ‘घर’ शब्द का समानार्थी शब्द लिखिए (१)
५. यशोधर बाबू ने कौन सी भूमिकाएँ निष्ठा से निभाई ? (१)
६. अगर मन शिकायत करे तो किशनदा ने यशोधर बाबू से क्या कहा था ? (२)

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर अंत में पूछे गये प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

पारस क्या वह जो न सार को स्वर्ण बनावे ?
वह मनुष्य क्या जो न और का कष्ट मिटावे ?

गिरे हुए को प्रेम सहित ऊपर न उठावे ,
दुखी दीन का जो न विपद में हाथ बटावे ?
भरा हुआ हो उदधि तो भी चातक से क्या काम है ,
चाह स्वाति जल की उसे रहती आठों याम है।

७. पारस का क्या गुण है ? (१)
८. एक सच्चे मनुष्य की पहचान क्या है ? (१)
९. जल लेने के संबंध मे चातक की टेक क्या है ? (१)
१०. मनुष्य शब्द की भाववाचक संज्ञाएँ लिखिए। (१)
११. नेक इंसान के जीवन का उद्देश्य क्या होता है ? (१)

पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर अंत में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

और भी पहले वे कई बार आए है
एक बार
जब उनके हाथो में भाले थे
घोडों की टापों से खैबर की चट्टानें काँपी थी
एक बार
जब भालों की बजाय
उनके हाथो में तिजारती परवाने थे
बगल में संगीने थी
लेकिन इस बार और चुपके से आए है

१२. अंग्रेजों से पहले किन्ह किन्ह विदेशी ताकदो ने भारत को गुलाम बनाया था ? (१)

१३. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव और शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । (२)

एक बार
जब भालों की बजाय
उनके हाथों में तिजारती परवाने थे
बगल में संगीने थी

१४. आर्यो ने किन्हे हराकर भारत पर सत्ता स्थापित की थी ? (१)

१५. आज विदेशी ताकदे भारत में कैसे और किस रुप में आ रही है ? (१)

अथवा

पर्वतों पर फिर धुआँ छाने लगा है।
चलते चलते देश लँगडाने लगा है॥
बादलो ने खो दिया विश्वास सारा,
खेत बिन पानी के मुरझाने लगा है।
धूप में यह जिंदगी बाँधी गई है,
प्यास का गुस्सा कहर, ढाने लगा है।

१२. कवि के अनुसार किसने विश्वास खो दिया है और किसपर से ? (१)

१३. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव और शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। (२)

धूप में यह जिंदगी बाँधी गई है,
प्यास का गुस्सा कहर, ढाने लगा है।

१४. देश लँगडाने क्यों लगा था ? (१)

१५. 'विश्वास' शब्द का विलोम शब्द लिखिए। (१)

१६. **निम्नलिखित काव्यांश का भाव सौंदर्य स्पष्ट करते हुए शिल्प संबंधी कोई दो विशेषताएँ लिखिए। (लगभग ५० शब्दों में)** (४)

नही वक्त का जुल्म हमेशा
हम यों ही सहते जाएँगे।

हम काटो की
आरी और कुल्हाडी अब तैयार करेंगे ;
फिर जब आप यहाँ आएँगे ;
बरगद की डाली डाली कटती पाएँगे ;
ठूँठ मात्र यह रह जाएगा
नंगा बूचा,
और निगल जाएँगे तब हम इसे समूचा

अथवा

रहिमन ओछे नरन सौ, बैर भलो ना प्रीति ।
काटे चाटे स्वान के, दुहूँ भांति विपरित ॥
कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग॥

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग ४० शब्दों में लिखिए।

१७ मित्रता के संबंध में रहिम ने अपने दोहों में क्या कहा है ? (३)

१८. सामाजिक दुर्दशा की भीषणता गजल में कैसे व्यक्त हुई है ? (३)

अथवा

रूष्ट पीढी अपना दुख व्यक्त करते हुए कवि से क्या कहती है ?

निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर अंत में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

दिल्ली से लगभग ८६५ कि.मी. दूर है ये क्षेत्र। दिल्ली से यात्रा मार्ग मे धारचुला तक बस जाती है , आगे बैलों या खच्चरों पर रास्ता तय करना होता है , कौसानी मे पहला शिविर था। कौसानी आते ही प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत की याद हो आई। यही उनका घर है , जो सुनते है अब एक संग्रहालय बना दिया गया है। कौसानी की सुंदरता अद्भुत है। हर क्षण बदलता गगन , शांत सौम्य घाटी, चीड देवदार के घने जंगलों के बीच नववधू की तरह झाँकती कोई झोपडी और उसकी चिमनी से उठते धुएँ की पतली रेखा ...चारों ओर हिमधवल शैल शिखर पर पिघलती संध्या के अलसाए रंग गुलाबी, बैंगनी, सलेटी ...। पहाड में भूस्खलन का क्या अर्थ होता है , यह देखे बिना समझना कठीन है। पहाड का एक हिस्सा धँस जाता है , उस हिस्से की चट्टाने , पेड , मिट्टी सब एक बडे शोर के साथ नीचे लुढक पडती है। चट्टानों के चट्टानों से और पत्थरों से टकराने का शोर और फिर लपाक् ! नीचे बहती नदी तक इन लुढकते पत्थरों चट्टानों को कौन रोके! सीधे नदी में ही रुककर चैन मिलता है।नदी की धार इन नवागंतुक पत्थरों , चट्टानों को बडे वात्सल्य से धो पोंछकर , दुलारकर अपने परिवार में बिठा लेती है। यही नियती का भी क्रम है। शिखर पर पहुँचा व्यक्ति जब स्खलित हो गिरता है , तो उसके गिरने की कोई सीमा नही रहती। हाँ , तो कालीगाड में भूस्खलन से रास्ता रुक गया था। इस पार के इधर , उस पार के उधर।

१९. लेखक ने कौसानी के सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ? (२)

२०. ' क्रम ' शब्द का रुप उपसर्ग लगाकर बदलिए। (१)

२१. नदी पत्थरो के प्रति अपनापन कैसे दिखाती है ? (१)

२२. कौसानी पहुँचते ही लेखक को किसकी याद आती है ? (१)

अथवा

कुछ लोग थे, जो करसुल छोडकर बाहर नही गए या जा नही पाए और यही रहकर अकाल के 'कष्ट' भुगत रहे थे, सयाजी उनमें से एक था। सयाजी के न जाने का पहला कारण था उसके एक पैर का न होना। वह बाएँ पैर से लँगडा था। अनेक सालों की आदत पड जाने के कारण वह बैसाखी के सहारे बडी आसानी से तेजी से चल लेता था। खेत मे काम भी करता था। पर इस इकलौती टाँग ने कभी गाँव की हद पार नही की थी। कारण यह कि बैसाखी के सहारे गाँव की सीमा पार कर दूसरी जगह जाना उसके लिए संभव नही था। वह अकाल में,अन्न की खोज में,गाँव छोडकर कही और चला भी जाता, अपने लँगडे पैर की परवाह न करता,पर उसके सामने दूसरी कठिनाई थी अपनी मेहरारू की।

उसके पाँव भारी थे। अत इस अकाल मे, कंगाली मे आटा गीला। एक और खाने वाले मुहँ का आगमन होने वाला था,और तीसरा भी कारण था। पहला उसके एक पैर का न होना,दूसरा कारण दो पैरों का होना और तीसरा कारण था चार पैरो का होना अर्थात सयाजी की गऊ माता। वह अपनी पत्नी और बच्चो से जितना प्रेम करता था , उससे भी अधिक ममता उसे अपनी गैया पर थी। गऊ माता की सेवा किए बिना उसका न कोई दिन ढलता था , न रात बीतती थी। गऊ याने सिर्फ एक चौपाया प्राणी है और इनसान की बात वह नही समझती ,यह उसे मान्य ही नही थी। खरिया मे जा वह उससे बातें करता था। उसके मन की बातें गऊ माता समझती है , यही उसका विश्वास था। इनसान की सारी बाते यह चौपाया जानवर समझता है। अकाल पडा था। कही दूर तक अनाज का पता ही नही था। साथ ही दूर दूर तक कही हरी घास भी नही थी। उसकी गाय को खाने के लिए कुछ नहीं था। गाय की खाली नाँद देखकर सयाजी की आँखे भर आती थीं।

१९. सयाजी गाँव छोडकर कही और क्यों नहीं जा पा रहा था ? (२)

२०. गाय की खाली नाँद देखकर सयाजी की आँखें भर आती थी (इस वाक्य को सामान्य वर्तमानकाल में परिवर्तित कीजिए।) (१)

२१. सयाजी कभी गाँव की हद पार क्यों नहीं कर पाया था ? (१)

२२. सयाजी को अपने गाय के प्रति बहुत ही लगाव था , यह बात गद्यांश के किस वाक्य से स्पष्ट होती है ? (१)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग ८० शब्दों में लिखिए।

२३. सती पाठ मे लेखक ने सामाजिक कुरितियों पर कैसे व्यंग्य किया है ? (५)

२४. भगतसिंह और उनके साथियों ने अंग्रेजो के साथ साथ भारतीय पूँजपतियों के विरुध्द युध्द क्यों छेडा था ? (५)

अथवा

अकाल के कारण करसूल गाँव की अवस्था कैसे हो गई थी ?

निम्नलिखित पठित गद्यांश के आधार पर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

धरती देखी , अम्बर देखा ,बस्ती देखी , जंगल देखा। प्रकृति की सल्तनत मे , संतुलित सुषमा मे कोई शिकवा शिकायत नही ,मगर हसरते इनसान को जहाँ भी देखा एक दास्ताने दर्द दिल लिए ही देखा। हमारी पृथ्वी की तीन चौथाई से भी अधिक , यानी सही माने में ५ / ७ हिस्सा तो , जल आवरण ही लपेटे हुए है , सो भी कही कही इतना गहरा कि माउंट एवरेस्ट कभी सागर स्नान को उत्तर आए तो उसके भी सर से पानी गुजर जाए ! दूसरी ओर धरातल से सैंकडो कि मी. की ऊँचाई का सवाल फिलहाल छोड भी दे तो २४/ २५ कि. मी. तक की मोटाई का वायु आवरण हमें लपेटे हुए है। इससे भी कम १५/ १६ कि. मी. तक टोपोस्फियर नामक पट्टी को भी समझने से हमारा काम चल जाएगा। इसी पट्टी मे हमे अक्सर ही देखने को मिल जाता है कि बदलता है रंग आसमाँ कैसे कैसे ! इसी पट्टी में हमें जीवनोपयोगी विभिन्न गैसे मिल जाती है , जिनमे मुख्य है नाइट्रोजन ७८ प्रतिशत , ऑक्सीजन २१ प्रतिशत और शेष १ प्रतिशत मे जलवाष्प रजकण , सूक्ष्म जीवाणु , सूक्ष्म परागकण , हाइड्रोजन , आर्गन , नियान , कार्बन डाइऑक्साइड , हीलियम, क्रिप्टन और ओजोन आदि की बारात। स्पष्ट है कि प्रकृति ने वनस्पति के लिए जीवनदायिनी नाइट्रोजन और

मानव के लिए प्राणवायु ऑक्सीजन बडी दरियादिली से दे रखा है। हम शराफत से अगर चाहे तो प्रकृति से मिल जुलकर जीवेत् शरदः शतम् को सत्य सिध्द कर सकते है ; परंतु हमे ... ? हमें तो ' शौकहै हरदम , नई तर्जे जफा क्या है !' यानी प्रकृति के संतुलन को डिगाने की शरारत मे मजा आता है ! और जब हमारा ही किया हमारे सामने आता है तब ये हाय हाय कि मौसमे कैसी बेवफा हो गई है। दीवाली बाद तक पंखे चल रहे है ; होली बाद तक रजाई कम्बल ओढे जा रहे है ; जब बरखा चाहिए तब 'अरमानों की सूनी दुनिया से ' सूखी बरसाते यों ही गुजर जाती है और जब फसल तैयार खडी हो तब बेवफा बादल बेवक्त बरस आते है।

२५. प्रकृति की सल्तनत में और हसरते इनसान में लेखक ने कौन सा फर्क देखा ? (१)

२६. टोपोस्फियर में हमे कौन सी गैसे मिल जाती है ? (२)

२७. गद्यांश में आयी कोई दो भाववाचक संज्ञाए लिखिए। (२)

२८. टोपोस्फियर की पट्टी के बारे मे लेखक क्या समझाते है? (१)

२९. प्रकृति से मिलकर हम क्या कर सकते है ? (१)

३०. हमारे किए से मौसमें कैसे बेवफा होती है ? (२)

३१. प्रकृति के संतुलन को डिगाने की शरारत मे मजा आता है। (इस वाक्य को अपूर्ण भूतकाल में परिवर्तित कीजिए। (१)

खंड ग (२५ अंक)

निम्नलिखित जनसंचार माध्यम पर आधारित प्रश्नो के उत्तर लिखिए। (लगभग १० से २० शब्दों में)

३२. पत्रकारिता का अर्थ क्या है ? (१)

३३. संपादन के सिद्धांत कौनसे होते है ? (१)

३४. हिन्दी के कोई दो समाचार पत्रों के नाम लिखिए। (१)

३५. समाचार में कौनसे तत्व आवश्यक होते है ? (१)

३६. खोज परक पत्रकारिता से आप क्या समझते है ? (१)

३७. विवेक उच्च माध्यमिक विद्यालय,फोंडा में मनाये गये ' स्वतंत्रता दिवस ' पर ७० से ७५ शब्दों में प्रतिवेदन लिखिए। (५)

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर फीचर तैयार कीजिए। (लगभग १०० शब्दों में) (५)

३८. धर्म निरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता

अथवा

सोशल मीडिया की लत

३९.   निम्नलिखित अंग्रेजी परिच्छेद का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।   (५)

The stream of national consciousness flows incessantly. As the Gang emerging in the Himalaya takes many courses and forms and fulfils the spiritual and physical needs to the people of India, similarly the thoughts of the great sages living in the caves of the Himalayas have always remained the source of inspiration for the people of his country,acting as a unifying influence in many ways, Ganga is one but has many names.Whether we call it Mandakini, Bhagirathee or by any Other names, it is the same, its sacred waters acting as the life line and giving solace of the People. For all places, races, castes, villages and towns of the country the Ganga has been the Loving and caring mother throughout the ages. The same conception of the land of our birth as our mother has always been the mainstay of national consciousness for the Indians

४०. अमन\ अनन्या गावकर , घर क्र. ६३९ , इंधीरा नगर .सांखळी गोवा से नीचे दिए गए विज्ञापन के आधार पर आवेदन पत्र तैयार करता \ करती है।   (५)

आवश्यकता

विज्ञान शिक्षक

शैक्षणिक योग्यताएँ — बी. एसी. , बी.एड.

— संगणक का ज्ञान आवश्यक

अनुभव — कम से कम एक साल

पूरी जानकारी के साथ आवेदन करें।

संर्पक — मुख्याध्यापक

— माध्यमिक विद्यालय

वाळपई गोवा।

****